"आवारा मसीहा - एक अनुशीलन"

प्रा क्क थ न

श्री विष्णु प्रभाकर हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र, यात्रा विवरण आदि का सृजन करके हिन्दी साहित्य को श्रीवृद्धि की हैं। आधुनिक हिन्दी नाटककारों में और जीवनीकारों मे वे विशेष ख्याति प्राप्त है। वे प्रमुखतः मानवतावादी एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के दीपस्तंभ हैं। उनके साहित्य में विशेषतः जीवनी में मानव चरित्र का सुंदर अंकन हुआ है। वे एक मोसेजीवी लेखक हैं।

आरंभ से ही मुझे "जीवनी" विधा में रूचि रही है। सारा संसार एक साहित्य है और वही साहित्य श्रेष्ठ है, जिसमें मनुष्य जीवनी की सच्चाई है और वह विधा है "जीवनी।" आधुनिक काल में अन्य गद्य विधाओं के समान "जीवनी" विधा का भी विकास स्वतंत्र रूप से हुआ। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध आदि साहित्य की सृष्टि हिन्दी साहित्य में द्रुत गति से हुई। लेकिन अन्य गद्य विधाओं की तुलना में जीवनी साहित्य का विकास सीमित ही रहा। जीवनी एक जीवित व्यक्ति की अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है। मनुष्य जीवन की सच्ची जीवन गाथा होती है। वह काल्पनिक न होकर सत्यप्रधान होती है। इसमें व्यक्ति की महानता एवं उसका आदर्श हमारे सम्मुख रहता है। इतना होने के बावजूद हिन्दी साहित्य में उपन्यास, नाटक, कहानी, एकांकी, जैसे काल्पनिक एवं मनोरंजित साहित्य की सृष्टि अनेक मात्रा में हुई। इसपर अनेक रूपों में शोधकार्य भी होता रहा। इस दृष्टि से जीवनी विधा मात्र उपेक्षित

रह गयी। यह बडी खेद की बात है कि जो विधा हैं व्यक्तिप्रधान सत्यप्रधान एवं वास्तविक धरातल की . उस जीवनी विधा का स्थान हिन्दी साहित्य में गौण बन के रह गया। आज तक कोई शोध कार्य भी इस जीवनी विधा पर स्वतंत्र रूप से नही हुआ है। अतः मेरी दृष्टि से लघु-शोध प्रबंध के लिए "जीवनी" विधा का चुनाव उचित रहा है।

प्राचीन काल से बंगला साहित्य का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर हुआ। अपने भारत में बंगला साहित्य को प्रथम स्थान दिया गया है। लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि हमारे देश की राष्ट्राभाषा एवं अधिकांश जनता की भाषा हिन्दी होने पर भी हिन्दी साहित्य का प्रभाव बंगला साहित्य से बढकर नही है। इसलिए बंगला साहित्य से हिन्दी में अनूदित "देवदास" 'चरित्रहीन' 'गृहदाह' रचनाएँ पढी, विशेषकर बंगला उपन्यास सम्राट शरतचंद्र चटर्जी के बारे में। जब हिन्दी साहित्य में श्री विष्णु प्रभाकर ने शरतचंद्र की जीवनी "आवारा मसीहा" का सृजन किया। तब मेरे मन में बडी जिज्ञासा निर्माण हुई कि क्या"आवारा मसीहा" में वास्तविक शरतचंद्र की खोज की है? क्या यह सच है एक साधारण इन्सान देवता का रूप बन सकता है? जिसतरह चोरी करने पर चोर कहलाता है, आवारगी करने से गुंडा बन जाता है, उसीतरह यह आवारा शरत मसीहा कैसे बन गया? इस महान साहित्यकार के पीछे किसकी प्रेरणा थी। आदि अनेक प्रश्न मेरे मस्तिष्क में मंडराने लगे। तब मैंने "आवारा मसीहा" का अनुशीलन करना अपना आत्मिक समाधान माना।

लघु-शोध प्रबंध का विषय - "आवारा मसीहा एक अनुशीलन" है। अभी तक लघु-शोध-प्रबंध की दिशा में विष्णु प्रभाकर के प्रकाशित "जीवनी" के बारे में शोध कार्य नही हुआ है, यद्यपि उनके व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व के बारे में कुछ शोध कार्य जरूर संपन्न हुआ है। अतः उनके "आवारा मसीहा" जीवनी का अनुशीलन हमारा प्रमुख उद्दिष्ट रहा है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध सात अध्यायों में विभाजित है -

प्रथम अध्याय :- "विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" में

श्री विष्णु प्रभाकर का जन्म, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह और प्रभाकर शब्द का रहस्य आदि पर प्रकाश डालते हुए उनका जीवन-परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं का प्रभाव विष्णुजी पर कैसे हुआ तथा उन्हें कौनसी साहित्यिक प्रेरणा मिली इसका विवेचन करते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। विष्णुजी की ग्रंथ संपदा-कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य, जीवनी साहित्य, एकांकी साहित्य, वैचारिक साहित्य, बाल साहित्य, अनुदित तथा संपादित आदि साहित्य का उल्लेख करते हुए उनके कृतित्व के बारे में संक्षेप में परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय :- "हिन्दी जीवनी साहित्य का परिचय" में

साहित्य और जीवन का संबंध स्पष्ट करते हुए जीवनी विधा को आधुनिक काल की देन स्वीकार किया है। आरंभिक जीवनीकार तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख किया गया है। जीवनी विधा के विकास-क्रम को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और वर्तमान काल इन तीन कालों में विभाजित किया है। इसमें जीवनी के विकास के बारे में बताते हुए जीवनीकार और उनकी रचनाओं का उल्लेख किया गया है। अंत में हिन्दी जीवनी साहित्य के प्रमुख जीवनीकार द्वारा लिखी गयी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का परिचय दिया गया है।

तृतीय अध्याय :- "जीवनी परिभाषा स्वरूप तथा तत्व" में

मानव और जीवनी का संबंध स्पष्ट करते हुए आरंभिक जीवनी का स्वरूप व्यक्त किया है। जीवनी का व्युत्पत्तिपरक अर्थ को स्पष्ट किया है। प्राचीन भारतीय साहित्य में जीवनी शब्द का प्राचीन रूप चरित काव्यों के रूप में मिलता है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी जीवनी की परिभाषा तथा वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला है। उसके साथ ही जीवनी के तत्त्व के अंतर्गत वर्ण्यविषय, चरित्रचित्रण, देशकाल, उद्देश्य और

भाषा-शैली आदि का विस्तृत रूप में विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय :- "जीवनी : अन्य साहित्यिक गद्य विधाओं से तुलना" में

जीवनी और अन्य साहित्यिक गद्य विधाओं की तुलना की गयी है। जीवनी और रेखाचित्र, जीवनी और कहानी, जीवनी और उपन्यास आदि जीवनीपरक एवं साहित्यिक गद्य विधाओं के साथ जीवनी की तुलना करते हुए उसका महत्त्व निर्धारित किया है। इसके साथ ही जीवनी और आलोचना, जीवनी और इतिहास आदि गद्य विषयों की जीवनी के साथ तुलना की गयी है। जीवनीकार और इतिहासकार दोनों में साम्य-वैषम्य का चित्रण हुआ है।

पंचम अध्याय :- "आवारा मसीहा एक अनुशीलन "में

"आवारा मसीहा" जीवनी का संश्लेषण करते हुए जीवनी की सार्थकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। "आवारा मसीहा" जीवनी की कथावस्तु को तीन पर्वों में विभाजित किया है। इसमें चरित्रनायक शरतचंद्र के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्त्व का विश्लेषण करते हुए शरतचंद्र के जन्म से लेकर मृत्यु तक वर्णन चित्रित किया गया है। अतः चरित्रनायक शरतचंद्र के व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही जीवनी के तत्त्वों की दृष्टि से "आवारा मसीहा" जीवनी की समीक्षा की गयी है। इसके अंतर्गत वर्ण्यविषय, चरित्रचित्रण, देशकाल, उद्देश्य और भाषाशैली आदि तत्त्वों का विवेचन करते हुए जीवनी की सार्थकता एवं महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

षष्ठ अध्याय :- उपसंहार में

उपसंहार के रूप में अनुशीलन के निष्कर्ष को प्रकट करने का यथातथ्य प्रयास किया है। अंतमें "आवारा मसीहा" एवं जीवनी साहित्य का महत्त्व स्पष्ट करते हुए अध्ययन की उपलब्धि और संभावनाओंपर प्रकाश डाला है।

कृतज्ञता-ज्ञापन :-
==========

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लेखन में मुझे जिनसे सहयोग मिला, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। सर्व प्रथमतः मैं उन समस्त लेखकों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनकी रचनाओं का प्रयोग मैंने सहायक ग्रंथो के रूप में किया है।

इस लघु शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में मुझे मार्गदर्शन करनेवाले श्रद्धेय प्राचार्य नेमिनाथ गुंडेजी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। अतः मैं उनकी हृदय से ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य में मुझे आदरणीय मा· गजानन सुर्वे, डॉ·केशवलाल शहा, प्रा·भंडारे एस·टी·, प्रा·प्रकाश गायकवाड, सौ·पुष्पावती दत्तवाडकर, सौ·छायादेवी घोरपड़े आदि की सहायता प्राप्त हुई। मेरे आरदणीय गुरूवर्य प्रा·जयवंत जाधव और सौ·जयप्रभा जाधव जी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ। यदि मुझे अंतिम समय में इनकी सहायता नही मिलती तो निश्चित ही मेरा यह कार्य अधूरा रह जाता। अतः मैं उनकी हृदय से ऋणी हूँ।

मेरे आदरणीय पिताजी श्री·खुदाबक्ष दस्तगीर मुल्ला और स्नेहशील माताजी सौ·गुलशन मुल्ला की कृपा से ही यह शोध कार्य संपन्न हो सका। इस शोध कार्य में हमारे परिवार के भाई श्री अजीत और भाभी सौ·फरीदा, एवं छोटे भाई राजू एवं बहन वहिदा के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल सौ·एस·पी·जाधव, श्री·पवार एस·बी· और अन्य ग्रंथपाल सदस्य इन्होंने मुझे सहाय ग्रंथ पाने की सुविधा दी। मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ। और अंत में यह शोध प्रबंध अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले श्री·मुकुंद ढवळेजी, श्री·बाळकृष्ण कुलकर्णी और श्री·सुशिलकुमार कांबळेजी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

कोल्हापुर

दिसम्बर, 1993·

कु· राबन खुदाबक्ष मुल्ला

एम्·ए·

"आवारा मसीहा - एक अनुशीलन"

प्रथम अध्याय

"विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

द्वितीय अध्याय

"हिन्दी जीवनी साहित्य का परिचय"

तृतीय अध्याय

"जीवनी परिभाषा स्वरूप तथा तत्व"

चतुर्थ अध्याय

"जीवनी : अन्य साहित्यिक गद्य विधाओं से तुलना"

पंचम अध्याय

आवारा मसीहा एक अनुशीलन

षष्ठ अध्याय

उपसंहार